Original Research Paper History

गांधीवादी विचारक के रूप में जय प्रकाश नारायण (Gandhiwadi Vicharak ke Roop Me Jai Prakash Naryan)

ड़ा. बलकार सिंह | सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, आई.जी.यू. मीरपुर रेवाडी

ABSTRACT

''वर्तमान राजनीति में विश्रंखलता फैलती जा रही है। दलों के आदर्शों के विस्तार की अपेक्षा उनका स्वार्थपूर्ण दृ टकोण, आदर्शों का अवमूल्यन, व्यक्तिगत तथा विशे ा हितों के लिए दलनि ठा का परिवर्तन, विधायकों का क्रय–विक्रय, दल की आन्तरिक अनुशासनहीनता, दलों के बीच अवसरवादी मित्रता तथा सरकार की अस्थिरता आदि आज के विचारणीय वि ाय बन बए हैं। 1

आधुनिक भारतीय विचारकों में जयप्रकाश नारायण का अग्रणी स्थान है। जयप्रकाश नारायण महान समाजवादी, लोतंत्र के रक्षक तथा अपने अनुभवों की सार्वभौमिकता में अद्वितीय हैं। रा ट्रवाद, समाजवादी आन्दोलनों में उनका योगदान अतुलनीय था। संक्षेप में वह बीसवीं सदी के भारत के दर्पण थे।

KEYWORDS

जयप्रकाश नारायण का जीवन परिचयः–

महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायी जयप्रकाश नारायण की लगभग आधी शताब्दी तक भारत के सार्वजनिक जीवन पर छाए रहे। उनमें दूसरों को प्रभावित करने की गजब की ताकत थी। निडरता, नैतिक साहस तथा देशवासियों के लिए प्रेम की भावना उनमें कूट–कूटकर भरी हुई थी।

जयप्रकाश नारायण जी का जन्म बिहार के सिताबदियारा गांव में जो अब उत्तर प्रदेश में है, 11 अक्टूबर 1902 को हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पटना में हुई। बाल्यकाल से ही नैतिक तत्वों के प्रति उनका आकर्षण रहा और भगवद्गीता ने उन्हें प्रेरणा दी। अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ करते समय वे गीता के कर्म करो संदेश से अनुप्रणित रहे। एम. एन. राय का इन पर काफी प्रभाव पड़ा, लेकिन उनकी राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करने में सबसे ज्यादा योगदान गांधीजी का रहा। 3. बारह वर्ष की आयु पूरी होने पर उन्होंने अपनी सिताबदियारा में प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ली तथा आगे की पढाई के लिए पटना गए। पटना का स्कूली जीवन उनके लिए निर्णायक सिद्ध हुआ। वहां पर वे सरस्वती भवन में राष्ट्रीय गतिविधियों के सम्पर्क में आए जो राष्ट्रीय नेताओं का केन्द्र था। उस स्तर पर ब्रिटिश भारत के प्रान्तों में प्रचलित राजनीतिक स्थिति ने उसे स्कूल अध्ययन की अपेक्षा अधिक प्रभावित किया। अतः अन्याय के प्रति विरोध की भावना कम उम्र में ही स्पष्ट हो गई थी। 4

1914–22 ई0. तक का काल जयप्रकाश नारायण का काल तीन मुख्य उल्लेखनीय घटनाओं के कारण महत्वपूर्ण रहा। महात्मा गांधी 1915 ई0 में भारत वापिस लौटे। वे अहिंसक तरीके से राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाना चाहते थे। जयप्रकाश का उस समय बंगाल के क्रान्तिकारियों के प्रति विशेष आकर्षण था। 5

यद्यपि गोपाल कृष्ण गोखले का जयप्रकाश नारायण पर प्रभाव था लेकिन गांधीजी की सादगी तथा आम आदमी के साथ उनकी पहचान ने उन पर गहरा प्रभाव डाला। वे गांधीजी द्वारा चलाए गए अहिंसक आन्दोलनों से इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने अपना सारा जीवन सादगीपूर्ण जीने तथा राष्ट्रीय हित के लिए काम करने की सोचने लगे। यह बात ध्यान देने योग्य है कि गांधीजी के अतिरिक्त जयप्रकाश बालगंगाधर तिलक के प्रति आकर्षित हुए जो भारतीयों को निडर होकर काम करने के लिए तथा गीता के आदर्शों का पालन करने के लिए कहते हैं। 6

अपने विद्यार्थी जीवन में जयप्रकाश मार्क्सवाद की तरफ आकर्षित हुए। पुरानी समाजवादी पार्टी लेनिन मार्किसम के तहत शुरू की गई था लेकिन इसने धीरे–ध ीरे गांधी की तरफ कूच किया। समाजवाद वर्ग के खिलाफ वर्ग की अग्रिम स्थापना करना चाहता है गांधीवाद वर्गों में कटौती करके। समाजवाद एक वर्ग को विजित करके अन्य वर्गों को समाप्त करना चाहता है लेकिन गांधीवाद वर्गों को मिलाकर इस वर्ग व्यवस्था को समाप्त करना चाहता है ताकि कोई वर्ग भेद न रहे। 7

सात साल यू.एस.ए. में पढने के बाद, जयप्रकाश नारायण अपनी मातृभूमि वापस लौटे। वो आरामदायक जीवन बिताने में रूचिगत नहीं थे। उन्होंने अपना सारा जीवन लोगों की भलाई के लिए बिताने का निश्चय कर लिया था। 8

जयप्रकाश ने गांधीजी के उद्देश्यों के संदर्भ के बारे में कहा है कि गांधीजी ने अच्छे साधनों से अच्छे उद्देश्य प्राप्त करने की अनिवार्यता पर बल दिया है। विश्व में घटित हुई घटनाएं सिद्ध करती हैं कि गांधीजी ने जो कहा है वह पूर्ण सत्य है। समाजवाद का लक्ष्य भी एक अच्छे समाज की स्थापना करना है। इस दृष्टि से अच्छे साधनों से ही ऐसा समाज स्थापित हो सकता है।

समाजवाद का अंतिम लक्ष्य है राज्यविहीन समाज की स्थापना, किन्तु समाजवाद राज्य का सामाजिक क्रान्ति का पक्षधर बनाकर सर्वशक्तिमान बना देता है। जबकि गांधीवाद समाजवाद की बात ही राज्यविहीन समाज की स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति के लिए करता हुआ सामाजिक प्रकियाओं को राज्य पर कम से कम निर्भर करने का प्रयास करता है।

जयप्रकाश ने गांधीजी के प्रभाव में स्वीकार किया कि राजनीति में नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखा जाना चाहिए। उनके अनुसार गांधीजी ने साधन तथा साध्य को समाज स्तर पर रखकर एक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किया है। 9

जब यू.एस.ए. में रहने के बाद, जयप्रकाश भारत आए तो भारत दोबारा जोश में था, 1919–1922 की यादें ताजा हो गईं। गांधीजी के साथ यह बंधन पहले से अधिक मजबूत हो गया। जितना समय जयप्रकाश यू.एस. में थे उनकी पत्नी प्रभावती गांधी व कस्तूरबा के साथ बेटी बनकर रही।

इस समय राष्ट्रवादी आन्दोलन पूरी तरह आदेश के शिखर पे था। गांधीजी आन्दोलन के अगले संघर्ष की तैयारी कर रहे थे। जयप्रकाश वर्धा में गांधीजी से मिलने गए। वहां पर वे नेहरू से भी मिले। जे पी, गांधी, नेहरू व प्रभावती भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक के लिए इकट्ठे साथ गए। नेहरू जयप्रकाश के अधिक प्रभावित हुए तथा उन्हें इलाहाबाद अपने के लिए आमन्त्रित किया। गांधीजी व नेहरू से उनकी समीपता ने उनका राजनीतिक जीवन उजाग करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1930 के प्रारम्भ में गांधीजी ने नमक सत्याग्रह किया। जयप्रकाश नारायण ने इसमें बढ–चढकर भाग लिया। 10

दूसरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1932 में शुरू हुआ। गांधी, नेहरू व दूसरे महत्वपूर्ण नेता सलाखों के पीछे डाल दिये गये। जयप्रकाश नारायण छोटी सी अवधि में कांग्रेस के एक मुख्य कार्यकर्ता बन गए। इस स्तर पर जयप्रकाश को कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी बनने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके लिए उन्होंने कांग्रेस का भूमिगत कार्यालय बनाया और सविनय अवज्ञा आन्दोलन को देश के दूसरे भागों में फैलाया। 11 अंततः जयप्रकाश को भी 7 सितम्बर 1932 के मद्रास में हिरासत में ले लिया गया और उनको नासिक सेन्ट्रल जेल में रख दिया गया। बाम्बे की फ्री प्रेस जर्नल ने मुख्य शीर्षक के साथ ये बात छापी कि कांग्रेस के दिमाग को गिरफ्तार कर लिया गया है। 12

नासिक जेल में जयप्रकाश कुछ जवान समाजवादी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिले। इन जेल साथियों के साथ उसने एक समाजवादी पार्टी का आयोजन तैयार करने की योजना बनाई। जो कम्यूनिस्ट पार्टी के विपरीत भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की ध ारा में काम करेगी और इस योजना से कांग्रेस समाजवादी पार्टी का जन्म हुआ। 13

1939 में, जयप्रकाश ने 'कांग्रेस समाजवादी' शीर्षक के अन्तर्गत साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका निकालनी शुरू कर दी। उन्होंने किसान व मजदूर संगठन के द्वारा समाजवाद की विचारधारा का प्रचार किया। उन्होंने 'युवा समाज' 'महिला समाज' का आयोजन किया। उन्होंने शहरों में समाजवादी पुस्तक क्लब का आयोजन किया।

अगस्त 1942 में, गांधीजी द्वारा भारत छोडो आन्दोलन शुरू किया गया। जे पी उस समय हजारीबाग जेल भेज दिए गए थे। इस आह्वान पर बड़े कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जयप्रकाश चारों तरफ फैले इस अवसाद से चिन्तित थे। उन्होंने अपने जेल साथियों के साथ जेल की दीवार कूदने की योजना बनाई। इस प्रकार वे जेल से भाग गए। 14

30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या ने एक युग का अन्त कर दिया। जयप्रकाश को इस घटना से बहुत झटका लगा। उन्होंने इस मुद्दे को उठाने में बड़ा साहस दिखाया। 16. गांधीजी की दुखद हत्या पर दुख व्यक्त करने के लिए दिल्ली में एक सभा का आयोजन किया गया। स्वाभाविक रूप से घटित हुई घटना पर गुस्से की लहर थी। जयप्रकाश ने पूरी तरह से खुलकर भारत के गृहमन्त्री पर आक्षेप कियां उन्होंने सरदार पटेल से स्पष्टीकरण मांगा। जब वहां पर गांधीजी की हत्या करने का

खुला प्रचार था तब कोई विशेष उपाय क्यों नहीं किया गया। 17

जेपी को एहसास हुआ कि सारी पारम्पारिक राजनीति अपर्याप्त थी और भारत के लिए अनुचित थी और उनका समाजवाद गांधीवादी सर्वोदय की तरफ बढना शुरू कर दिया। वे विनोना भादे द्वारा 1951 ई0 में चलाए गए भूदान आन्दोलन की तरफ मुड़ गए। 18. उन्होंने अपनी सर्वोदय योजना को एक ठोस कार्यक्रम के रूप में समर्पित ठहराया। उन्होंने कहा ''गांधीवाद समाजवाद है।''

जयप्रकाश के अनुसार सर्वोदय के सम्बन्ध में अनेक व्यक्ति अहिंसा व न्यायप्रियता के संबंध में काफी कुछ वार्तालाप करने के बाद भी सामाजिक परिवर्तन लाने में भयातुर दिखाई देते हैं यदि सर्वोदय योजना का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो यह केवल भावुकता प्रधान योजना न होकर सामाजिक कान्ति का ठोस सुझाव है। परम्परावादी सामाजिक चिन्तन से बाहर यह पहला प्रयास है जो नये समाज की रचना का चित्र प्रस्तुत करता है। समाजवादी, विशेषतौर से वैज्ञानिक समाजवादी, विचारकों द्वारा जिन्हें निरपेक्ष होना चाहिए तथा तथ्यों के आधार पर विचार प्रकट करना चाहिए, सर्वोदय की योजना के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाकर उन व्यक्तियों का समर्थन करना चाहिए जो सर्वोदय के कार्य के लिए अपना सर्वस्व दान दे चुके हैं। 18

वर्धा में 30 जनवरी 1950 को सर्वोदय योजना प्रकाशित की गई। यह योजना राष्ट्रीय पुनर्निमाण के गांधीजी के सिद्धान्तों के कियान्वन के लिए प्रस्तुत की गई थी। इसका आदर्श एक अहिंसक, शोषणरहित, सहकारित के आधार पर स्थापित समाज है जो जाति अथवा वर्ग पर आधारित नहीं होगा और सभी को समाज अवसर की सुविध ाा प्रकाशित होगी। कृषि भूमि का स्वामित्व का अधिकार जमीन जोतने वाले को दिया जाएगा जो कि समाज द्वार स्वीकृत नियमों के आधार पर होगा।

जयप्रकाश दलगत तथा सत्ता की नीति से निराश हो गए थे। सर्वोदय आन्दोलन ने उन्हें व्यवहारिक जीवन में उतरने का अवसर मिला। अप्रैल, 1954 में उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को सर्वोदय आन्दोलन के प्रति समर्पित करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने 1954 में शकोदर में एक आश्रम की स्थापना की और सर्वोदय आन्दोलन तथा ग्राम उत्थान के लिए नए कार्यक्रमों की शुरूआत की। 19

मूल्यांकनः–
जयप्रकाश बाबू का मूल्यांकन करते हुए ड़ा. शर्मा ने लिखा है कि जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के क्षेत्र में माने हुए तथा सुविख्यात व्यक्ति हैं। यह उनका महत्वपूर्ण योगदान था कि जिन्होंने भारत के समाजवादी आन्दोलन को कांग्रेस के झण्डे के नीचे चल रहे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के साथ सम्बन्ध किया। 20

गांधीजी के सदृश जयप्रकाश की भी यही धारणा थी कि कम से कम शासन करने वाली सरकार ही अच्छी है। अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जयप्रकाश नारायण एक अनन्य देशभक्त थे। वे नैतिक मूल्यों के आधार थे। गांधीवादी जातीय स्वभाव के भद्र व्यक्ति थे। 21. 8 अक्टूबर 1979 को अपनी मृत्यु से पूर्व के कुछ वर्षों में, भारतीय राजनीति में ऐसी हलचल पैदा कर दी जो इतिहास में अभूतपूर्व है। उनके निधन से भारतीय इतिहास में एक महान अध्याय का अन्त हो गया। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण अपने जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरे। मार्क्सवाद से राष्ट्रवाद, समाजवाद से सर्वोदय।

सन्दर्भ सूचिः–

1. जयप्रकाश नारायणः बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का 52वां दीक्षान्त भाषण, 18 फरवरी 1970 लोकतन्त्र समीक्षा से उद्धृत पृष्ठ 41
2. गिरिल जैनः द मिरर ऑफ माडर्न इण्डिया. जेपी द रोमाण्टिक रिवोल्यूशनरी' द टाइम ऑफ इण्डिया (नई दिल्ली) 10 अक्टूबर 1979
3. जयप्रकाश नारायणः लोक स्वराज्य पृष्ठ 6
4. वसन्त नार्गोल्कर, जेपी क्रूसेड फॉर रिवोल्यूशन (नई दिल्ली, 1975) पी. 13 डी.आर. बाली माडर्न इण्डिया थोट फ्राम राममोहन राय टू जयप्रकाश नारायण (नई दिल्ली, 1988) पेज 231
5. एलेन एण्ड वैन्ड़ी स्कार्फ. पेज 31
6. उपर्युक्त पेज 31
7. बिमल प्रसाद, सर्वोदय सोशलिज्म और डैमोक्रेसी, पेज 8
8. युसूफ मेहरेली, ''जयप्रकाश'' योजना, वोल्यूम ग्ग्, नं0. 18 अक्टूबर 31, 1977, पेज 12
9. संतोश चतुर्वेदी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण।
10. जयप्रकाश नारायण, टोवार्डस टोटल रिवोल्यूशन, वोल्यूम प्प्, बाम्बे 1978, पेज 179
11. गिरिजा शंकर ''सोशलिस्ट मूवमेन्ट इन इण्डिया और जयप्रकाश नारायण (1929–48) वोल्यूम ग्टप्, नं0. 2, पेज 81
12. नारायण च्ग्ग
13. युसूफ मेहरेली 'इन्ट्रोडक्शन' इन जयप्रकाश नारायण टोवार्डस स्ट्रगल, पेज 7
14. मधू दानदायेत, जयप्रकाश नारायण : द मैन एण्ड हिज आडियज (बाम्बे 1981) पेज 59–61
15. डब्ल्यू एच मोरिस जान्स, द गवर्नमेण्ट एण्ड पोलिटिक्स ऑफ इण्डिया लन्दन, 1967, पेज 73
16. विमल प्रसाद, सोशलिज्म, सर्वोदय एण्ड डेमोक्रेसी, पेज 91
17. संतोश चतुर्वेदी 'लोकनायक जयप्रकाश नारायण' पेज 19
18. उपर्युक्त पेज 8
19. ड़ा. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, पेज 446